आयाम तय न हो सके अपनी तलाश के।
अब सिर्फ़ चन्द ख़ून के क़तरे क्षितिज पे हैं,
मिलते नहीं निशां कोई सूरज की लाश के।

(पाँच)

पढ़-लिख गए तो हम भी कमाने निकल गए,
घर लौटने में फिर तो ज़माने निकल गए!
घिर आई शाम, हम भी चलें अपने घर की ओर,
पंछी भी अपने-अपने ठिकाने निकल गए।
बरसात गुज़री, सरसों के मुरझा गए हैं फूल,
उन से मिलन के सारे बहाने निकल गए!
पहले तो हम बुझाते रहे अपने घर की आग,
फिर बस्तियों में आग लगाने निकल गए।
ख़ुद मछलियाँ पुकार रही हैं कहाँ है जाल,
तीरों की आरजू में निशाने निकल गए।
किन साहिलों पे नींद की परियां उतर गई,
किन जंगलों में ख़्वाब सुहाने निकल गए?
'शाहिद' हमारी आँखों का आया उसे ख़याल,
जब सारे मोतियों के ख़जाने निकल गए।

(छह)

कब किसी का यक़ीन होते हैं,
फ़लसफ़े अर्थहीन होते हैं।
एक आंसू की बूंद में आकर,
ग़म के दरिया विलीन होते हैं।
पेट उनका भी भरना मुश्किल है,
घर में बच्चे जो तीन होते हैं।
आदमी आज कल ज़माने में,
चलती-फिरती मशीन होते हैं।
ठेस लगने से टूट जाएंगे,
प्रेम धागे महीन होते हैं।
आसमानों पे कल तलक थे मगर,
शेर अब तो ज़मीन होते हैं।

(सात)

वक़्त इक ठहरा हुआ सा ताल है,
ज़िन्दगी उसमें उगी शैवाल है।
सुर्ख़ फूलों से लदी जो डाल है,
आंधियों के ख़ौफ़ से बेहाल है।
घिर गया है हर तरफ़ से आदमी,
हर तरफ़ फैला ग़मों का जाल है।
रुक नहीं सकता हवा का आक्रमण,
जब तलक पेड़ों के तन पर छाल है।
जब से खेतों में मशीनें आ जमीं,
उजड़ा-उजड़ा गांव का चौपाल है।
बर्फ़ जम सकती नहीं उस देह पर,
धूप की ओढ़े हुए जो शाल है।

(आठ)

दिल में नहीं अब कोई आस,
बिछड़ गई है फूल से बास।
इक क्षण मुस्काने के लिए,
हम भी पहरों रहे उदास।
चंचल यादों का इक स्पर्श,
पैर तले हो जैसे घास।
उसके जंगल हरे भरे,
सूखा पत्ता अपने पास।
तुझ पे भरोसा कैसे करूँ,
मुझको नहीं खुद पर विश्वास।
उसके नाम से होंठों पर,
देर तलक ठहरी है मिठास।
कैसा अनोखा ये अहसास,
ज़िस्म है जल-थल रूह में प्यास।

(नौ)

आंख हुई वो काजल वाली,
रुत लहराई बादल वाली।
मुद्दत बाद खुली हैं जुल्फ़ें,
ख़ुशबू महकी संदल वाली।
आरजुओं से दूर ही रहना,
यह धरती है दल दल वाली।
उस की चुप चुप-सी आंखों में,
ख़ामोशी है जंगल वाली।
बूंद-बूंद में छुपी हुई है,
नरमी पहली कोंपल वाली।
रात गए छन छन करती है,
सूनी हवेली पीपल वाली।
ग़ज़ल जहां से क्यूँ कर हारे,
यह लड़की है चम्बल वाली!

(दस)

सूनी सूनी सी इक रहगुज़र शेष है,
मेरे हिस्से का अब भी सफ़र शेष है।
धूप ढल भी गई मेरे घर में, मगर,
दोपहर शेष थी, दोपहर शेष है।
दिल के अन्दर छुपी है तेरी आरजू,
ठहरे पानी में कोई भँवर शेष है।
आंधियों से कहो ठहर जाएं ज़रा,
एक पत्ता ही, बस, डाल पर शेष है।
देवता पत्थरों के पिघल जाएंगे,
मेरी आवाज़ में गर असर शेष है।
ऊँचे-ऊँचे मकानों के साए तले,
टूटा-फूटा हुआ एक घर शेष है।
मेरे दिल की गुफ़ाओं में 'शाहिद' कहीं,
झिलमिलाता हुआ इक नगर शेष है। ❖